संवाद

नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार विधेयक पहली अप्रैल 2010 से पूरे देश में लागू हुआ है। यह कानून देश के सभी बच्चों को नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार देता है। यह कानून हर बच्चे को विद्यालय में प्रवेश दिलाएगा। लेकिन हम सभी जानते हैं कि बच्चा तभी सीखता है जब विद्यालय का वातावरण भय तथा तनाव से मुक्त हो, जब बच्चे को शिक्षक से प्यार तथा आत्मीयतापूर्ण व्यवहार मिले, जब कक्षा में सीखने-सिखाने की रोचक विधियाँ हों। यह कानून शिक्षकों की प्रतिबद्धता की बात करता है। वास्तव में शिक्षक का व्यवहार, उसके पढ़ाने के तरीकों, पाठ्यसामग्री में निहित सोच को बच्चों तक पहुँचाने की विधियाँ – इन सबका बच्चे के सीखने पर गहरा असर पड़ता है। शिक्षक सफल है तो बच्चा सफल है और बच्चा असफल है तो शिक्षक भी कहीं असफल है। इसलिए ज़रूरी है कि प्रत्येक शिक्षक शिक्षा का अधिकार कानून में उल्लिखित अपने दायित्वों की जानकारी भलीभाँति रखता हो। इसी बात को दृष्टिगत रखते हुए प्रस्तुत अंक की शुरुआत – शिक्षा का अधिकार कानून और शिक्षकों के उत्तरदायित्व, लेख से की गयी है ताकि हमारे सभी शिक्षक साथी अपने दायित्वों को जानकर उनका निर्वहन कर सकें। अब समय आ गया है कि शिक्षक बच्चों को गुणवत्तापरक शिक्षा देने के अपने कर्त्तव्य के प्रति प्रतिबद्ध हों।

हर बच्चा मन में उमंग और उत्साह लिए विद्यालय में कदम रखता है। वह बहुत कुछ कहना चाहता है, सीखना चाहता है। यह तभी संभव हो सकता है जब शिक्षक कक्षा के प्रत्येक बच्चे को स्नेह दें, उसकी हर बात ध्यान और धैर्य से सुनें, उससे आत्मीय नाता बनाएँ और बच्चे की रुचि को ध्यान में रखते हुए शिक्षण प्रक्रिया के दौरान विभिन्न गतिविधियाँ करवाएँ। बच्चे को शिक्षक से स्नेह मिलेगा तो वह शिक्षक को उससे भी अधिक स्नेह और सम्मान देगा। बच्चे की आयु, स्तर और रुचि को केंद्र में रखते हुए सीखने का अवसर दिया जाए तो निश्चित रूप से वह इस अवसर का भरपूर लाभ उठाएगा।

आज आवश्यकता इस बात की भी है कि प्रत्येक शिक्षक अनुशासन की पारंपरिक अवधारणाओं पर पुनर्विचार करे। अनुशासन के नाम पर बच्चे को शारीरिक, मानसिक अथवा किसी भी प्रकार का दंड देने का दुष्परिणाम सुप्रसिद्ध शिक्षाविद् गिजुभाई बधेका ने अपनी कविता ***खून का पानी*** *में कुछ इस तरह से व्यक्त किया है –*

कल के अध्यापक ने सोचा था
कि दंड और पुरस्कार देने से ही बालक में बुद्धि आएगी
कल के अध्यापक ने सोचा था
कि किताबी पाठ और कविता रटने से ही ज्ञान मिलता है।
कल के अध्यापक ने सोचा था
कि सख्त नियमों की बेड़ियाँ पहनाने से बालक संयमी बनेगा।
उसने सोचा था
कि शिक्षण में स्वतंत्रता देंगे तो विद्यार्थी पढ़ेगे नहीं।
इसलिए उन्हें दबाकर रखना चाहिए।
इसलिए उसने ज्ञान का संपूर्ण क्षेत्र विद्यार्थियों
की पढ़ाई के लिए निर्धारित कर दिया।
और परीक्षा को ही एक मात्र जीवन लक्ष्य मानकर
उसी की उपासना में अपने और
विद्यार्थियों के खून का पानी कर दिया।

शिक्षक कक्षा के प्रत्येक बच्चे का प्यार, विश्वास और सम्मान दंड से नहीं बल्कि उसे स्नेह देकर हासिल कर सकता है, यह बात यदि प्रत्येक शिक्षक अच्छी तरह समझ लें तो सीखना हर बच्चे के लिए संभव होगा।

अकादमिक संपादक